जंगनामा मोहनां

बोल शुभ जग आदि सृष्टि ब्रहम उपजाई

कशप सुत बलवान समरो सरस्वती माई 1

त्रेता युग अवतार प्रथम जमदग्नि भयो

उनके सुत परसराम हुए छतरी मार हरायो 2

द्वापर युग में पाण्डव सुत दरवासा गुरु को मान

ताके कुल में सूरमा मोहन प्रगटे आन 3

मोहन पढ़ भगवानदास मथरा से आए

गोकल मथरादास पुत हरीकेश जाए 4

गुरुकुल से पढ़ फिर आए बीच काशी

हरीकेश के वंश फिर पुत भए अबनाशी 5

अबनाशी दिल्ली शहर के गंगा जमना जायो

तिमरू शाह बादशाह ने पास वज़ीर बनायो 6

मोहन मैया दास बादशाह पास बिठायो

सरोपा दे हुकम मीरशाह मन हर कहायो 7

मैया दास के पुत दोनों शौरी जानो

हरिचन्द, हरनन्द फ़ौज ले दखन छायो 8

करन युद्ध सूरे लड़न विच मैदान

मीरां शाह बादशाह ने राखे पास दीवान 9

बादशाह सुल्तान मुहम्मद खान जी

मीरां शाह के पूत बड़े बलवान जी 10

हीरानन्द दीवान बचन दृढ़ राखियो

बसत रहे बेटा सोभा भाखियो 11

धनकोट शहर बनवाए शोभा करे जहान

चूनी से पुरोहित, राय सीघढ़ हुन मोहन प्रगटियो 12

प्रथम कोट धनकोट मोहन मबहन ने कोट बनाया

बसे कई बार बंस ओथों आया 13

बादशाह के हुकम मोहन सब मन लेते

बीते कई सहस्त्र बरस जस बहू कीते 14

बादशाह बाबर के हरजस राय दीवान

सात मूही सरमुकट है भया मोहन सुल्तान 15

प्रथम शीश भीदया में कुछ नाहीं

बाबा सिद्ध समरो जिस कृपा यह जस गाएं 16

सारंग मानक मोनू और महते इनको कुल मोहनां के हाइं

ऋद्धि सिद्धि वर्धिनी करना करतूतां ताईं 17

कश्यप गोत्र माधनी शाखा प्रवर पंज बखान

हुकम हुमांयू शाह के सदा मोहन बरतान 18

अब तेरह सौ तरेसठ सम्वत जो बीते

मोहन कृपा राम मुलक जीतो सारे 19

अकबर शाह के पे बीरबल वज़ीर सदा रहो

ब्राहमण कौम का उपकार करन करतूतां आओ 20

ढंग मंग देखे अन्दर भाग बरसाए

महम्मद शाह बादशाह ने मनसाराम बुलायो 21

महम्मद शाह आखे साथ लै सरोपा

मनसाराम तू पंजाब अन्दर जा 22

यह हुकम पाये पंजाब अन्दर चले आओ

दीवान मनसाराम का प्रहलाद राय जस गाओ 23

लाहौर का दीवान सूबा किया है मनसाराम

मुग़ल और पठान जीते करन आये सलाम 24

दीवान मनसाराम का पुत सेवा राम

सपूत है सेवाराम का पुत जयराम 25

जयराम चन्द्र स्वरूप बादशाह लुभायो

पकड़ जबरदस्त पंजाब से ले आयो 26

बेगमां बादशाह से कही बात बना

जयराम सेती आप बेटी का करो निकाह 27

ऐसी बात सुन बादशाह ने खूब पाई छल

तुम लेओ बेटी शाहज़ादी, नाल साडे रल 28

जयराम न जाए कही सेवाराम से सारी गल

नस चलो बाप जी पंजाब अन्दर चल 29

मिल के बाप बेटा चले मार्ग छाए

समय नाल लाहौर अन्दर भए प्राप्त जाए 30

यह बात सुन बादशाह ने दिल्ली मंगाए फेर

जय ताईं सद अन्दर तुर्का लिया घेर 31

बेटी ब्याह के आप दीना थाल नाल खवाओ

जयराम ताईं मुस्लमान सब कहन ठाकर शाह 32

हुन खबरां गइयां मुल्क सारे शाह कीतो कहर

सुन बात मोहन करुपे चढ़े दिल्ली शहर 33

मोहन बंस खड़े हैं दल जोड़

जयराम सेती छोड़ काफर सीस दिए फोड़ 34

जयराम सेती कुल मोहनां, सीस दिते आन

उठ चले ममदोट मोहन अपने मैदान 35

मोहन इकठे हो गये सब फ़ौज में लख एक

ममदोट कलस चढ़ाओ सत गुरां राखी टेक 36

मोहन इकठे हो गये सब दीनी पाती पट

लड़ांगे मैदान सेती ला कर असी हठ 37

एह बात सुन बादशाह ने लिख हुकम कीतो तां

ममदोट शहर मोहनां कतल करयो जा 38

विच सभा दे बैठ के बोलया हशमत खान

हुकम होवे बादशाह दा जित लियावां तां 39

शाह देयो सरोपा संग फौजां देयो भारी

तोप गुबार फील रथ घनी सवारी 40

चढ़या मुग़ल पठान कोपना वर कूच बुलाइयो

गढ़ धनकोट तीस कोस पर डेरा लाइयो 41

सद इक वकील नूं हशमत खां फरमाईयो

जा कहो तू मोहनां करन लड़ाई आइयो 42

एह वी कह दे जाये के दो लख घोड़ा आया

पांव पड़ो जो जीवणा खां साहब फ़रमाया 43

मोहनां कन वकील जा एह बात सुनाई

आया हशमत खां संग मोहनां करन लड़ाई 44

एक सलाह फिर मोहनां आपस विच ठहराई

जा कहो हशमत खां से करसां खूब लड़ाई 45

कहियो ने वकील नूं जा आखीं हशमत खान

जानीं राजपूत तां जे कीनो पगड़ भान 46

कह दे जा के खान नूं सब कुछ हमरे पास

मोहन तां तूं जानना जे तुझे कटाऊँ घास 47

कहया जा वकील ने सुन हशमत खां राजा

सच सुनाऊँ तुझ को जो मोहन साजन साजा 48

मोहन आखन गल जो मुग़ल सुन लीजो कनी

रण सूरे राजपूत जो तेग़ बहादर धनी 49

जीना लोड़े भाग जा महम्मद शाह के पास

नहीं ते सुन लै हश्मता तुझे कटावें घास 50

हशमत खां अमरा ने अपना हुकम सुनायो

आये मुग़ल पठान सब आन सलाम बुलायो 51

दारू गोला लै के हथ फ़ोजों के दीजे

बाशाह का नमक जगत विच ज़ाहर कीजे 52

कंगन घोड़े मुलक लेओ युद्ध करो घमसान

मारो मोहन ममदोट आखे खान सुल्तान 53

रण सूरे राजपूत सुत तेग़ां हथ पाए

धोंसे खूब निशान आन रण आगे आए 54

गरजन लागे तोप करोप से चले जनबूरा

उडे हशमत खां मोहन संग लड़दा सूरा 55

हल्ला कीता मोहनां दित्ते मुग़ल भजा

सेना मारी सन अफसरां पकड़ लए अमरा 56

भागी सेना शाह दी वेखे कुल जहान

हशमत खां को कैद कर मोहन पकड़े जान 57

लिख अरज़ी वकील ने पादशाह पास पठाई

मोहनां कीती जंग करी खूब लड़ाई 58

पादशाह को ख़त वाच वज़ीर सुनाए

हशमत खां मोहन पकड़यो धनकोट सधाए 59

पिछली पैरीं नस गये जो तेरे उमरा

जे तुध मोहनां जीतना बहुत फ़ौज मंगा 60

सुनी बात जब बादशाह करोप बहुत मन आयो

बादल वांगो गरज्यो खौफ़ सभी ने खाइयो 61

पीर बखश अमीर ने सत सलाम उठाये

खरली खां पठान आन पैरी हथ लाये 62

दोवें आखन बादशाह नूं सुन लै धर के कान

मारो मोहन ममदोट आखे खान सुल्तान 63

एह गल सुन के पादशाह कासद भेज्या चा

भेज कासद खुरासान तों लई फ़ौज मंगा 64

लै फ़ौज महम्मद शाह आप सेना संग लाया

हाथी घोड़े पालकी बहुत सामान लै आया 65

तोप गुबारा रहकला तरंग जंबूरा ला

जंगी फौजां साज के चढ़ आया बादशाह 66

मोहन वल वकील नूं दीतो बेग पठाए

जो कुछ केहा बादशाह सब दिता जा सुनाए 67

मोहनां कन वकील ने जा एह बात सुनाई

आइयो महम्मद शाह साथ तुम करन लड़ाई 68

मोहनां का सरदार अपना बंस सदावे

ऐसा कीजो जंग पुरष नारी जस गावे 69

गोबिन्द मथरादास ने जा कर करी सलाह

पाती हथ वकील दे दिती हथ फड़ा 70

जो कुछ मोहनां मथया लिख वकीलां कीनो

लिख पाती वकील जगत में ज़ाहर कीनो 71

हमरा मुस्लमान तुध जयराम बनायो

ऐस कभी अनर्थ दुष्ट सुनना नहीं पाइयो 72

जे तुध लोड़ी जिन्दगी अपना आप बचा

मोहन नमक हलाल हैं मरसन हथ दिखा 73

ऐसा ख़त वकील ने महम्मद शाह दे वल

जो कुछ मोहनां आखिया खोल सुनाइ गल 74

पाती सुन के शाह क्रोध मन बहुत रसायो

बीच कचहरी बैठ सभी को हुकम सुनायो 75

चढ़ी फ़ौज चतरंग तुरत सेना बहु भाजी

ऊंट हाथी संगा बेग तरंगन गाजी 76

महम्मद सेना ले चढ़े तुरत भये असवारा

कौन करे ता गिनती सेना कटक शुमारा 77

थर थर कम्बे भूमि चल मार्ग जे सेना

बड़े बड़े सरदार वडे हैन बलवाना 78

गढ़ धनकोट के तीस कोस उतर कर डेरा

दीनो दूत बिठाए चार चौफेरे घेरा 79

चढ़ आई सेना शाह की तुम पे हुआ सवार

ऐसी मोहन श्रवन सुन करी फ़ौज तैयार 80

सीधे गए मैदान युद्ध को सन्मुख धाय

रण सूरे राजपूत तोप ले मरड़ी लाय 81

दो दल हुए असवार तोप महताबी लाई

मोहन महम्मद शाह आपे विच करन लड़ाई 82

आठ पहर जंग रहयो बहु कीनी मारो मार

हटे नांही मैदान तों नांही खलोते हार 83

मोहनां सेना फटी मार तोपां सो छाई

महम्मद के दल मां आए बीच करें लड़ाई 84

चार चौफेरा बादशाह दल घेरा पाए

हटना नहीं मैदान से जंग ओह करन सवाए 85

तोप गुबारा रहकले दिये जंबूरे डाह

इस युद्ध मोहनां अपने सीस दीने कटाये 86

खेत पास आप पादशाह पहरे खलवाए

इन मोहनां दे साथ तुर्क छूने न पाए 87

आवन आन के नार देख के मुरदे चावन

आपन परखां साथ नार सती हो जावन 88

अत्तर गुलाब मंगायो करवायो इशनान

चन्दन नाल सटराइयो महम्मद खड़ा हैरान 89

सतियां अपने जत सत मुरदियाँ हथ पाए

अपने पुरख सैयां आन झोली पाए 90

सतियां संग पुरखां सिर पर पहुंचे आन

चारों युग बैकुण्ठ दा मोहन राज कमान 91

प्रहलाद राय कोई सहगड़ा पुर भेरा अस्थान

तब तेरह सौ त्रेसठ सी जिस सने बधवान 92

जो मोहन सी इस खेल में सेना के सरदार

दो सौ अठासी मोहन सी कुल करे कौन शुमार 93

प्रथम पंजाबा, गुलाबा, फिर शामा मल

दीवान राधाकिशन सी, प्रधान शंकरमल 94

सावन, कांशीराम, गोकल, गण्डा, झण्डा, काहन
भजू, गुलाबा, तध, धनपत, धर्मू, दानधनी,
राम, बसू, होर मोहन 95
वस्ती, आयू, हाकम, हज़ारी ते बिहारी रंग ऐसे लाइयो
सोभाराम सखा मोहन बड़े महरबान भजु भगवानदास
जेहा दान करन आइयो 96
गोहरसिंह, मैयासिंह, मानसिंह बुलाइयो
दो सौ अठासी मोहन का प्रहलाद राय जस गाईयो 97
गंग, सम्भा, दास, मल फिर चारे यार
मूला ते दूला करनदास लाभसैन करें पियार 98
जसवन्त, नथूमल, सारजस, मखन, मोती, मानिये
घसीटा, राम, लछमन, जय, दया बखानिये 99
कुलकर्ण, केसरमल, दाता जैसे जंग मचाइयो
महम्मद शाह का कटक मोहनां बहुत मार मुकाइयो 100
दुनीचन्द, चन्दाराम जी महताब, राधेमल
जयमल, ज्वाला, मथरा करन रल के गल 101
बसंत, बादल, शामजी, नथूराम
कांशीराम, भगवान, राजाराम, बिशन और गीधाराम 102
मतवाल चन्द, निहाल, नानक मोहन
मनसाराम, उत्तम ते अर्जन मोहन 103
मखनमल, बूटामल शादी हाइयो
दो सौ अठासी मोहन गिने जाको अंत न पाइयो 104
मोए मरद मैदान बहतर संग बालक नार
दो सौ अठासी मोहन सी कुल कौन करे शुमार 105
सब बंस मैदान अन्दर सीस देने आइया
मोहनां दे जंग नूं कुल जहान देखन आइया 106
पिछे इक न रहया बादशाह ने एह मुनादी कीना
लोग सारे आखदे अब मोहन कोई न रहना 107
एह बात सुन प्रहलाद राय बेग दहली छाए
तां खिज़रे मोहन नूं एह गल जा सुनाई 108
जे ठोर हैसी खिज़रा मोहन ओहां पहुंचे आन
कुल बंस उपमां मोहन की अब करते ताईं बखान 109

इक बच्चे पिछे बंस मोहन कुल होया घायल

तू मोहन असाडे बंस दा उठ चल साडे नाल 110

अफ़सोस कीना खिज़र ने जां एह सुनी गल

कहन्दा ओह प्रहलाद नूं तूं राय हुन चल 111

सत घोड़े सत जोड़े सत लै सरोपा

मैं दो माह नूं औसां तू शताबी जा 112

खिज़रा राय नूं टोर के गया शाह के पास

हुकम होवे पंजाब का अब एह दिल की आस 113

शाह ने दे के सरोपा मलक का हुकम सुनाया

चतरंग दल साजे आन पंजाब धाइयो 114

दिल्लीपत सुल्तान मान खिज़रे का राखियो

करके बचन अधीन शाह मुख ऐसे बाखियो 115

खिज़रा ठकर शाह बन चढ़ियो सेना सहज

पहुंचा विच लाहौर दे लै के साज समाज 116

मिलया ठकर शाह बाप साधू ते तांइं

मिलया बाप बेटा तन भरया असी बर आंइं 117

साधू ठकर शाह ने राखी कुल की लाज

ठकर साधूराम का फिर करेसी काज 118

ठकर कहे प्रहलाद राय जी तुसी असाडी बांह

ढूंडो साक दीवान दा बंस वधेगा तां 119

ठकर प्रहलाद राय खोल सुनाई गल

कंजरुड़ अन्दर दत्त भागा मलक बैठा मल 120

घर उसदे कन्या तू जा झोली डाह

दीवान साधूराम का अब करो होर ब्याह 121

कंजरुड़ अन्दर भागामल बड़ा जां को बल

जा मिलया मोहन ठकर दत्त भागे दे गल 122

घर तेरे कन्या तू मेरी झोली पा

दीवान साधूराम मोहन इस दे नाल वियाह 123

दत्त भागेमल ने पंचायत सदाई आय

साक मंगदा मोहन ठकर करां कौन उपाय 124

शहर दत्त पंचायत बैठी करके इक सलाह

तूं पुन्न कर दे आप बेटी बंस वधे तां 125

मिश्र नूं सदवाइयो इस साह कढ़ीयो आन

गुरुवार तिथि त्रिओदशी पख नछत्तर जान 126

रुचिराम पुरोहित बात सोच बिचारी

केसर टिका लेयो सेर भर मिसरी सारी 127

रोक रूप्या गुड़ साथ ब्राहमण को दीजे

जाओ शहर लाहौर बेग कुछ विलम न कीजे 128

दत्त कन्या शुभ लछमी भागवन्ती शुभ नाम

ले के शगन पुरोहित चले मोहन के धाम 129

सेना सहित पुरोहित शाह ठकर मढ़ धाया

साधूराम लै के शगन तिलक मस्तक पर लाया 130

ढोल तुरयाँ मरदंग गीत नारी मुख से गावन

भाट मांग सब लोग आन वधाई पावन 131

रोक रूप्या ते मिसरी इक इक लागी पाया

शहर गन्दौड़ा फेरिया साधूराम वियाह सुधाया 132

प्रथम कोट धनकोट दाग़ो दाग़े लायो

तेरह सौ तरेसठ विच पंजाबे आयो 133

पुर पटन ममदोट देस धरती सब मिली

आन मोहन प्रगटियो बादशाहां गल मनी 134

सत्र सौ खान पिछे चढ़े जिस हवा मण्डल छायो

महम्मद शाह बादशाह ने सब कूप भरायो 135

असवज सी मास पख नछत्तर भावे

पख महीने छटवें बुधवार चन्द्र गन गावे 136

सत घोड़े सत सरोपा मोहरां संग पाइयो

बुदगी केसर सब लाग लागियां पाइयो 137

इस बिध मोहन जस लियो दौलत दी लुटा

ओह दत्त बेटी लछमी मोहन लई बियाह 138

ठकर करे सलाम बाप नूं अरज़ सुनाई

कहे साधू ठकर शाह प्रथम मने तुझे भाई 139

जो कोई होसी मोहन रीत तेरी कर लेवे

मैनूं मनसी फेर प्रथम तैनूं सब सेवे 140

ठकर सत सलाम कर चलयो दिल्ली धाय

इस बिध ख़ज़रे बाप दा हथीं किया बियाह 141

सत महीने भये नारियां मंगल गाइया

रात समय दत्त सुता मोहन नूं एह हस कर आया 142

हम को तेरा पेट खुशी कीजो जग सारे

तुमरी रत बलवान मोहन होसन जग सारे 143

साधूराम स्वर्ग में इस बिध कीनी बास

पत जन्म सी राज रख महता दास 144

सिद्ध बेद आन असीस दित्ती, मनों मोहन तार

इक बूटा कई टहनियां, पत होवन हज़ार 145

दत्त बेटी मोहन कीनी इस बिध सत दीना विहार

सारंग, मानक और फोनू महता फल परिवार 146

हरदास, बख़त बलन्द, मोहन और राय राधामल

करतूत करदे करन जैसी, जिसदा मिलदा फल 147

सारंग, मानक और फोनू, अब बंस वध्या आन

कुल बंसी साधूराम दा, सब राजसी सुल्तान 148

प्रथम पूजे बैद, भेद इसमें कुछ नाहीं

बावा सिद्ध सखों, जिस कृपा का गायें 149

सारंग, मानक, फोनू महते, कुल मोहन की माईं

ऋद्धि सिद्धि वर्धिनी, करन करतूतां ताईं 150

कश्यप सुगोत्र माधनी शाखा, प्रवर पंज बखान

हुकम हमायूं शाह दा, मोहन सदा बरतान 151

जो कोई मोहन मरद सी, नाले दुर्गादास

तां को सुत बलवान सी, लच्छमी दास 152

बेटी लाए प्रथम जादव राय

फिर वे अंत चन्द बंस को बढ़ाय 153

तां के तारा चन्द करने जस भारी

लाला सिंह, गुलाब राय जस करन बहकारी 154

तां के बेटे चार सन, चारों थे दीवान

ऋद्धि सिद्धि अरको धनी राजपूत जसवान 155

प्रथमी सहाय मल जयसिंह रो थे भाई

किशनचन्द जसवान मुग़लचन्द कला दिखाई 156

पूत भवानीदास बाप ----- जाईयो

भवानीदास सदा रंग पित्रां को लाईयो 157

सुल्तान सिंह, दीवान सिंह, जां को बड़ परवार

राजपूत रिज़क धनी सब आला सरदार 158

सुल्तान सिंह पूत चार सुपात्र आए

पहले मजलस राय धन कोख में आए 159

चूहउमल सी जिसने बस की सेज सवारी

कपूरमल दयावान कहे परख नर नारी 160

सरूपराय सूरमा जो तलवार का धनी

चारों पूत सपूत हैं जो हाथ के सखी 161

अनन्त बसंत मोहन राज भाग धाम

जां को बंस में दीवानसिंह, शिवसिंह नाम 162

दीवानसिंह के चलूत दो सपूत जाए

प्रथम राजमल भाग सोभा माए 163

बड़े मोतीराम हैं लोड़ीन्दा भाई

सुलखनराम गोवर्धन कोख जीनो माई 164

मोती के दो सुत भयो बहादर होड़ामल

बिन्दराबन तुलसी पोता सदा बंस अब चल 165

लोड़ीदचन्द मोहन मूलानाथ पुत जाइयो

दूजा पिंडीदास रास कारज कर लाइयो 166

सुखदयाल दयावान बात देवारास विचारी

दीवान का बंस बढ़या जग भई खुशी सारी 167

सुलखनमल के बंस में उपजे शंकरदास

निहालचन्द गणेश जी सब के कारज रास 168

तूं लाला हैं राजकोर बेटा कचहरी मल

तूं लख ते हज़ारी बरकतराय दे वल 169

भागमल के चार सुत चारों भये जसवान

गंडामल के बंस को अब करे व्याख्यान 170

फिर लाला कांशीराम राज से करतब काम

लाला जी जगन्नाथ राज रीत के पाए नाम 171

राजन के पास वे निवास करन आइयो

साधूमोहन का अब बंस बधाइयो 172

कांशीराम तू राजा नाल पाला है

जगन्नाथ, गंडामल करें असीस सफल कमाई है 173

हमरा मुस्लमान तुध जयराम बनायो
ऐसा कभी अनर्थ दुष्ट सुनना नहीं पाइयो 72
मोहनां का सरदार अपना बंस सदावे
ऐसा कीजो जंग पुरष नारी जस गावे 69
चढ़ आई सेना शाह की तुम पे हुआ सवार
ऐसी मोहन श्रवन सुन करी फ़ौज तैयार 80
सब बंस मैदान अन्दर सीस देने आइया
मोहनां दे जंग नूं कुल जहान देखन आइया 106
पिछे इक न रहया बादशाह ने एह मुनादी कीना
लोग सारे आखदे अब मोहन कोई न रहना 107